Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 20, Issue No. 2, April-2023, ISSN 2230-7540

जनाकांक्षाओं की नींव पर खडा लोकतंत्र का नवीन मंदिर

Harishankar Singh Kansana*

Asst. Professor, Department of Political Science, Govt College Mau, Bhind.

सार - ***शब्द "लोकतंत्र का मंदिर" श्रद्धा और महत्व के स्थान का प्रतीक है, जहां लोकतांत्रिक सिद्धांतों और मूल्यों को बरकरार रखा जाता है और उनका सम्मान किया जाता है। इस संदर्भ में, "लोकतंत्र का नया मंदिर" एक नए दृष्टिकोण या शासन की एक पुनर्जीवित प्रणाली का प्रतिनिधित्व करता है जो उन लोगों की बदलती आकांक्षाओं और जरूरतों को स्वीकार करता है जिनकी वह सेवा करता है। "लोगों की आकांक्षाओं की नींव" नागरिकों की मूलभूत इच्छाओं, आशाओं और अपेक्षाओं को दर्शाती है। इसका तात्पर्य यह है कि लोकतंत्र का नया मंदिर लोगों की सामूहिक इच्छा और सपनों पर आधारित है, जिसमें उनकी जरूरतें और इच्छाएं मार्गदर्शक शक्ति के रूप में हैं। यह एक लोकतांत्रिक प्रणाली का सुझाव देता है जो जनता की जरूरतों के प्रति उत्तरदायी है और उनकी आकांक्षाओं को पूरा करने का प्रयास करती है।***

कीवर्ड - ***जनाकांक्षाओं, नींव पर खडा, लोकतंत्र, नवीन मांदिर***

----------X----------

1.परिचय

मानव इतिहास के इतिहास में, लोकतंत्र आशा की एक किरण के रूप में खड़ा हुआ है, एक ऐसी व्यवस्था जो व्यक्तियों को सशक्त बनाती है और उन्हें अपने सामूहिक भाग्य को आकार देने का अधिकार देती है। सदियों से, लोकतांत्रिक सिद्धांतों की स्थापना और रक्षा के लिए अनगिनत संघर्ष और बलिदान किए गए हैं। फिर भी, लोकतंत्र की अवधारणा एक स्थिर इकाई नहीं है। इसे विकसित होना चाहिए और लोगों की बदलती आकांक्षाओं और जरूरतों के अनुकूल होना चाहिए। यह इस संदर्भ में है कि "लोगों की आकांक्षाओं की नींव पर खड़े लोकतंत्र के नए मंदिर" का विचार उभरता है - एक अमूर्त धारणा जो शासन के लिए एक नए और स्फूर्तिदायक दृष्टिकोण को समाहित करती है। समाज के मूल्यों और आकांक्षाओं के अवतार का प्रतिनिधित्व करने वाले भव्य और राजसी मंदिर की कल्पना करें। यह एक ऐसा स्थान है जहां लोग लोकतंत्र के आदर्शों की पूजा करने के लिए एक साथ आते हैं: स्वतंत्रता, समानता, न्याय और भागीदारी। हालाँकि, यह नया मंदिर केवल पत्थर और गारे पर नहीं बनाया गया है। इसकी नींव लोगों की आकांक्षाओं में निहित है - उनकी आशाओं, सपनों और इच्छाओं की सामूहिक अभिव्यक्ति। लोगों की आकांक्षाओं का आधार उन मौलिक आकांक्षाओं को दर्शाता है जो समाज के पाठ्यक्रम को आकार देती हैं। यह एक आवाज, अपनेपन की भावना और बेहतर भविष्य की खोज की इच्छा है। लोकतंत्र का नया मंदिर इन आकांक्षाओं को स्वीकार करता है और गले लगाता है, यह स्वीकार करता है कि शासन की शक्ति अपने नागरिकों की सामूहिक इच्छा से निकलती है।[1]

"लोकतंत्र का नया मंदिर" शासन की पुनर्कल्पित और पुनर्जीवित प्रणाली का प्रतिनिधित्व करता है। यह एक गहरी समझ को दर्शाता है कि लोकतंत्र केवल नियमों और संस्थानों का एक समूह नहीं है, बल्कि एक जीवित इकाई है जिसे उन लोगों के साथ प्रतिध्वनित होना चाहिए जिनकी वह सेवा करता है। यह नागरिकों और उनके लोकतांत्रिक संस्थानों के बीच की खाई को पाटने का आह्वान है, एक ऐसा स्थान बनाने के लिए जहां उनकी आकांक्षाओं को सुना जाए, महत्व दिया जाए और निर्णय लेने की प्रक्रिया के ताने-बाने में एकीकृत किया जाए। यह अवधारणा हमें लोकतंत्र के मूल सार और समाज में इसके उद्देश्य पर पुनर्विचार करने की चुनौती देती है। यह हमें यह सवाल करने के लिए मजबूर करता है कि क्या हमारी मौजूदा लोकतांत्रिक व्यवस्था वास्तव में लोगों की आकांक्षाओं को साकार करती है या यदि वे अपनी जरूरतों के प्रति उदासीन और अनुत्तरदायी हो गए हैं। यह हमें यह सुनिश्चित करने के लिए नए दृष्टिकोण और नवीन तंत्र पर विचार करने का आग्रह करता है कि लोकतंत्र एक जीवंत और सार्थक शक्ति बना रहे। लोगों की आकांक्षाओं की नींव पर खड़ा लोकतंत्र का नया मंदिर, समावेशी और सहभागी शासन की दृष्टि का प्रतिनिधित्व करता है। यह सक्रिय नागरिक जुड़ाव के महत्व पर जोर देता है, जहां व्यक्ति न केवल नीतियों के निष्क्रिय प्राप्तकर्ता होते हैं बल्कि लोकतांत्रिक प्रक्रिया में सक्रिय योगदानकर्ता होते हैं। यह उन

www.ignited.in

तंत्रों का आह्वान करता है जो खुले संवाद, विचार-विमर्श और सहयोग को सक्षम बनाते हैं, ताकि लोगों का सामूहिक ज्ञान निर्णय लेने का मार्गदर्शन कर सके।[2]

इसके अलावा, अवधारणा हमें याद दिलाती है कि लोकतंत्र का एक नया मंदिर अपने आप में एक अंत नहीं है बल्कि एक अधिक न्यायसंगत और न्यायपूर्ण समाज को प्राप्त करने का साधन है। यह हमें इस बात पर विचार करने के लिए मजबूर करता है कि कैसे लोकतांत्रिक संस्थाएं हमारे सामने आने वाली सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय चुनौतियों का समाधान कर सकती हैं। यह हमें सभी की भलाई और समृद्धि सुनिश्चित करते हुए लोकतांत्रिक मूल्यों को बनाए रखने वाले अभिनव समाधानों का पता लगाने की चुनौती देता है। "लोगों की आकांक्षाओं की नींव पर खड़ा लोकतंत्र का नया मंदिर" की अवधारणा हमें आत्मनिरीक्षण और परिवर्तन की यात्रा शुरू करने के लिए आमंत्रित करती है। यह हमें अपनी लोकतांत्रिक प्रणालियों का पुनर्मूल्यांकन करने, बाधाओं को दूर करने और विश्वास और समझ के पुलों का निर्माण करने के लिए आमंत्रित करता है। यह हमें सक्रिय नागरिकता की संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए प्रेरित करता है, जहां व्यक्ति अपने भाग्य को आकार देने और लोकतांत्रिक प्रक्रिया में सार्थक रूप से भाग लेने के लिए सशक्त होते हैं। जैसा कि हम अमूर्त अवधारणा की इस खोज को शुरू करते हैं, हम उन सिद्धांतों में गहराई से उतरेंगे जो इसे शामिल करते हैं, शासन के लिए इसके निहितार्थ, और संभावित लाभ यह पूरे समाज को ला सकते हैं। इस परीक्षा के माध्यम से, हम लोकतंत्र के सार और सकारात्मक परिवर्तन के उत्प्रेरक के रूप में कार्य करने की इसकी क्षमता पर प्रकाश डालने की उम्मीद करते हैं।[3]

2. लोकतंत्र की विकसित प्रकृति

लोकतंत्र, सरकार के एक रूप के रूप में, पूरे इतिहास में महत्वपूर्ण विकास के दौर से गुजरा है। प्रारंभ में, लोकतंत्र अक्सर निर्णय लेने की प्रक्रिया में भाग लेने से समाज के बड़े हिस्से को छोड़कर, कुछ विशेषाधिकार प्राप्त लोगों तक ही सीमित था। हालांकि, समय के साथ, लोकतंत्र की अवधारणा ने सार्वभौमिक मताधिकार के विचार को अपनाने के लिए विस्तार किया है, सभी नागरिकों को उनकी सामाजिक स्थिति, लिंग या जाति की परवाह किए बिना मतदान अधिकार प्रदान करना। मताधिकार का यह विस्तार लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं में व्यापक भागीदारी और समावेशिता सुनिश्चित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम रहा है। लोकतंत्र के विकास का एक और उल्लेखनीय पहलू विविध प्रतिनिधित्व के महत्व की मान्यता है। अतीत में, लोकतंत्रों में अक्सर व्यक्तियों के एक चुनिंदा समूह का वर्चस्व होता था, जिसके कारण हाशिए पर रहने वाले समूहों को राजनीतिक प्रक्रियाओं से बाहर रखा जाता था। हालाँकि, लोकतांत्रिक प्रणालियों में विविध प्रतिनिधित्व के महत्व का एहसास बढ़ रहा है। मतदाताओं और निर्वाचित प्रतिनिधियों दोनों के रूप में महिलाओं, जातीय अल्पसंख्यकों, स्वदेशी समुदायों और राजनीति में अन्य कम प्रतिनिधित्व वाले समूहों को शामिल करने के लिए प्रयास किए गए हैं। इस विकास ने अधिक समावेशी और प्रतिनिधि लोकतंत्र बनाने में मदद की है। लोकतंत्र की विकसित प्रकृति को आकार देने में तकनीकी प्रगति ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इंटरनेट और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के उदय ने नागरिकों को राजनीतिक संवाद में शामिल होने, अपनी राय व्यक्त करने और सरकारों को जवाबदेह ठहराने के लिए नए रास्ते प्रदान किए हैं। इससे पारदर्शिता बढ़ी है, सूचना तक अधिक पहुंच हुई है, और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म और ई-लोकतंत्र पहल के माध्यम से अधिक प्रत्यक्ष नागरिक भागीदारी की संभावना है। हालाँकि, यह गलत सूचनाओं के प्रसार और गोपनीयता के बारे में चिंताओं और जनता की राय में हेरफेर जैसी चुनौतियाँ भी लाया है।

इसके अलावा, सहभागी लोकतंत्र पर जोर बढ़ता जा रहा है, जो निर्णय लेने की प्रक्रिया में सीधे तौर पर नागरिकों को शामिल करना चाहता है। जनमत संग्रह, नागरिक पहल, टाउन हॉल बैठकें, और सहभागी बजट जैसे तंत्रों ने प्रमुखता प्राप्त की है, जिससे नागरिकों को नीतिगत निर्णयों पर अधिक प्रत्यक्ष प्रभाव डालने और अधिक जुड़ाव को बढ़ावा देने की अनुमति मिलती है। यह सहभागी दृष्टिकोण प्रतिनिधि लोकतंत्र का पूरक है और नागरिकों को उनके जीवन को प्रभावित करने वाले निर्णयों को आकार देने में सक्रिय रूप से भाग लेने का अवसर प्रदान करता है। लोकतंत्र की विकसित प्रकृति राष्ट्रीय स्तर तक सीमित नहीं है। वैश्वीकरण के माध्यम से दुनिया की बढ़ती परस्पर संबद्धता ने अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और शासन की आवश्यकता पर प्रकाश डाला है। जलवायु परिवर्तन, आतंकवाद और आर्थिक अन्योन्याश्रितता जैसे अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों के लिए राष्ट्रों के बीच सामूहिक कार्रवाई और समन्वय की आवश्यकता होती है। परिणामस्वरूप, सुपरनैशनल संगठन और क्षेत्रीय गठजोड़ उभरे हैं, जो लोकतांत्रिक मूल्यों को बढ़ावा देते हैं और वैश्विक चुनौतियों का समाधान करने के लिए सहयोग की सुविधा प्रदान करते हैं।[4]

3. लोगों की आकांक्षाओं का आधार

लोगों की आकांक्षाओं की नींव व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से उनकी मूलभूत इच्छाओं, आशाओं और बेहतर जीवन के सपनों में निहित है। इन आकांक्षाओं के मूल में खुशी, भलाई और पूर्ति की खोज है। लोग एक ऐसे समाज में रहने की आकांक्षा रखते हैं जो उन्हें अवसर, स्वतंत्रता और समानता प्रदान करता है, जहां वे फल-फूल सकें और अपनी पूरी क्षमता हासिल कर सकें। व्यक्तियों की आकांक्षाएं अक्सर व्यक्तिगत लक्ष्यों जैसे वित्तीय

www.ignited.in

स्थिरता, करियर की सफलता, शिक्षा, स्वास्थ्य और व्यक्तिगत संबंधों के इर्द-गिर्द घूमती हैं। लोग अपनी आर्थिक स्थितियों में सुधार करने, सार्थक रोजगार सुरक्षित करने, ज्ञान और कौशल प्राप्त करने, अच्छा स्वास्थ्य बनाए रखने और दूसरों के साथ प्रेमपूर्ण और सहायक संबंधों को बढ़ावा देने की आकांक्षा रखते हैं। ये आकांक्षाएं विकास, आत्म-सुधार और उद्देश्य की भावना के लिए सहज मानवीय इच्छा से प्रेरित होती हैं।[5]

सामूहिक रूप से, लोग ऐसे समाजों में रहने की इच्छा रखते हैं जो न्यायपूर्ण, समावेशी और लोकतांत्रिक हों। वे ऐसे वातावरण की तलाश करते हैं जहां उनकी आवाज सुनी जाए, उनके अधिकारों की रक्षा की जाए और उनकी गरिमा का सम्मान किया जाए। लोग निर्णय लेने की प्रक्रिया में भाग लेने की इच्छा रखते हैं, उन नीतियों को प्रभावित करते हैं जो उनके जीवन को प्रभावित करती हैं, और उनके समुदायों के विकास में योगदान करती हैं। वे सामाजिक न्याय, समान अवसर और लिंग, जाति, जातीयता, धर्म या पहचान के किसी अन्य रूप के आधार पर भेदभाव के उन्मूलन के लिए तरसते हैं। इसके अलावा, लोग सतत विकास और स्वस्थ पर्यावरण की कामना करते हैं। वे प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण, जलवायु परिवर्तन को कम करने और भविष्य की पीढ़ियों के लिए रहने योग्य ग्रह सुनिश्चित करने के महत्व को पहचानते हैं। पर्यावरणीय आकांक्षाओं में स्वच्छ हवा और पानी, जैव विविधता के संरक्षण और नवीकरणीय ऊर्जा और टिकाऊ प्रथाओं को बढ़ावा देने की इच्छा शामिल है।[6]

लोगों की आकांक्षाओं की नींव में शांति, सहिष्णुता और सामाजिक सद्भाव जैसे मूल्य भी शामिल हैं। व्यक्ति और समुदाय हिंसा, संघर्ष और उत्पीड़न से मुक्त शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की आकांक्षा रखते हैं। वे ऐसे समाजों की आकांक्षा रखते हैं जो विविधता का जश्न मनाते हैं, बहुसंस्कृतिवाद को गले लगाते हैं, और विभिन्न समूहों के बीच सहानुभूति, समझ और सहयोग को बढ़ावा देते हैं। शिक्षा और ज्ञान अर्जन भी लोगों की आकांक्षाओं के महत्वपूर्ण आधार हैं। व्यक्ति गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और आजीवन सीखने के अवसरों तक पहुंच की आकांक्षा रखते हैं जो व्यक्तिगत विकास, महत्वपूर्ण सोच और कभी-बदलती दुनिया को नेविगेट करने के लिए आवश्यक कौशल के अधिग्रहण को सक्षम बनाता है। शिक्षा व्यक्तियों को सशक्त बनाती है, उनके दृष्टिकोण को व्यापक बनाती है, और उन्हें अपनी आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए उपकरणों से लैस करती है।

3.1 समाज को आकार देने में आकांक्षाओं की भूमिका

समाज को आकार देने में आकांक्षाओं की भूमिका गहन और दूरगामी है। आकांक्षाएं एक प्रेरक शक्ति के रूप में काम करती हैं जो व्यक्तियों और समुदायों को बेहतर भविष्य की दिशा में काम करने के लिए प्रेरित करती हैं। वे समाज के मूल्यों, नीतियों और कार्यों को प्रभावित करते हुए एक दृष्टि प्रदान करते हैं और समाज के लिए लक्ष्य निर्धारित करते हैं। आकांक्षाएं सामाजिक प्रगति और विकास को प्रेरित करती हैं। जब व्यक्ति और समुदाय बेहतर जीवन की कामना करते हैं, तो वे अपनी परिस्थितियों को सुधारने और सकारात्मक बदलाव लाने का प्रयास करते हैं। आर्थिक विकास, तकनीकी प्रगति, और सामाजिक कल्याण के लिए आकांक्षाएं नवाचार, उद्यमशीलता और ज्ञान की खोज को बढ़ावा देती हैं। वे आर्थिक समृद्धि और सामाजिक उन्नति को बढ़ावा देने के लिए समाज को शिक्षा, बुनियादी ढांचे और अनुसंधान में निवेश करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। आकांक्षाएं समाज के मूल्यों और संस्कृति को आकार देती हैं। आकांक्षाएं एक समुदाय की सामूहिक आशाओं और सपनों को दर्शाती हैं और इसके साझा मूल्यों और आदर्शों को प्रभावित करती हैं। न्याय, समानता, स्वतंत्रता और मानवाधिकारों की आकांक्षाएं सामाजिक ताने-बाने को आकार देती हैं और उन सिद्धांतों का मार्गदर्शन करती हैं जिनका पालन समाज करता है। वे सामूहिक जिम्मेदारी की भावना को बढ़ावा देते हैं और व्यक्तियों को अधिक समावेशी और न्यायपूर्ण समाज की दिशा में काम करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। आकांक्षाएं सामाजिक एकता और सहयोग को बढ़ावा देती हैं। जब लोग समान आकांक्षाओं को साझा करते हैं, तो वे समान लक्ष्यों की दिशा में काम करने के लिए एक साथ आते हैं। सामाजिक सद्भाव, सामुदायिक कल्याण, और पर्यावरणीय स्थिरता के लिए आकांक्षाएं व्यक्तियों, समूहों और संगठनों के बीच सहयोग और सहयोग को बढ़ावा देती हैं। वे संवाद, सहानुभूति और सामूहिक कार्रवाई को प्रोत्साहित करते हैं, सामाजिक बंधनों को मजबूत करते हैं और अपनेपन की भावना को बढ़ावा देते हैं।[7]

आकांक्षाओं में यथास्थिति को चुनौती देने और सामाजिक परिवर्तन को चलाने की शक्ति है। पूरे इतिहास में परिवर्तनकारी सामाजिक आंदोलनों में समानता, न्याय और मानवाधिकारों की आकांक्षा सबसे आगे रही है। नागरिक अधिकारों के आंदोलनों से लेकर महिलाओं के मताधिकार आंदोलनों तक, अधिक न्यायसंगत और समावेशी समाज की आकांक्षाओं ने व्यक्तियों को भेदभावपूर्ण प्रथाओं को चुनौती देने, परिवर्तन की वकालत करने और सामाजिक मानदंडों और संस्थानों को नया रूप देने के लिए प्रेरित किया है। इसके अलावा, आकांक्षाएं सार्वजनिक नीतियों और शासन को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। नागरिकों द्वारा व्यक्त की गई आकांक्षाएं राजनीतिक एजेंडे और नीतिगत प्राथमिकताओं को प्रभावित करती हैं। सरकारें और नीति निर्माता अक्सर उन लोगों की आकांक्षाओं का जवाब देते हैं जिनकी वे सेवा करते हैं, मुद्दों को संबोधित करते हैं और सामाजिक आकांक्षाओं के अनुरूप सुधारों को लागू करते हैं। सुशासन, पारदर्शिता और नागरिक भागीदारी

www.ignited.in

की आकांक्षाएं लोकतांत्रिक संस्थानों और प्रक्रियाओं के विकास में योगदान करती हैं जो लोगों की इच्छा और आकांक्षाओं को दर्शाती हैं।[8]

4. लोकतांत्रिक प्रणालियों की वर्तमान स्थिति का आकलन करना

लोकतांत्रिक प्रणालियों की वर्तमान स्थिति का आकलन करना एक जटिल और बहुआयामी कार्य है जिसके लिए विभिन्न राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक कारकों के व्यापक विश्लेषण की आवश्यकता होती है। लोकतांत्रिक प्रणालियों को राजनीतिक भागीदारी को बढ़ावा देने, व्यक्तिगत अधिकारों और स्वतंत्रता की रक्षा करने और शासन में जवाबदेही और पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। हालाँकि, लोकतंत्र की स्थिति एक देश से दूसरे देश में महत्वपूर्ण रूप से भिन्न हो सकती है, और यहाँ तक कि एक ही देश के भीतर, लोकतंत्र के विभिन्न पहलू कम या ज्यादा विकसित हो सकते हैं। लोकतांत्रिक प्रणालियों की स्थिति का आकलन करने का एक महत्वपूर्ण पहलू राजनीतिक अधिकारों और नागरिक स्वतंत्रता के स्तर की जांच कर रहा है। इन अधिकारों में भाषण, सभा और संघ की स्वतंत्रता के साथ-साथ नागरिकों की स्वतंत्र रूप से अपनी राय व्यक्त करने, राजनीतिक प्रक्रियाओं में भाग लेने और शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शनों में शामिल होने की क्षमता शामिल है। मजबूत लोकतांत्रिक व्यवस्था वाले देशों में आम तौर पर इन अधिकारों के लिए मजबूत कानूनी सुरक्षा होती है, जिससे व्यक्ति अपनी चिंताओं को व्यक्त कर सकते हैं, सरकार की आलोचना कर सकते हैं और प्रतिशोध के डर के बिना सार्वजनिक संवाद में योगदान कर सकते हैं। इसके अलावा, स्वतंत्र मीडिया आउटलेट्स, विविध नागरिक समाज संगठनों और सक्रिय नागरिक जुड़ाव की उपस्थिति एक स्वस्थ लोकतांत्रिक वातावरण के संकेतक हैं।[9]

एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू चुनावी प्रक्रियाओं की सत्यनिष्ठा और निष्पक्षता है। नियमित और पारदर्शी चुनाव लोकतंत्र के मूलभूत स्तंभ के रूप में कार्य करते हैं, नागरिकों को अपने प्रतिनिधियों को चुनने और उन्हें जवाबदेह ठहराने का अवसर प्रदान करते हैं। लोकतंत्र की स्थिति का आकलन करने में चुनावी ढांचे का मूल्यांकन करना शामिल है, जिसमें चुनाव के लिए कानूनी ढांचा, चुनाव प्रबंधन निकायों की स्वतंत्रता और निष्पक्षता और अभियान के वित्तपोषण में पारदर्शिता का स्तर शामिल है। इसके अलावा, चुनावी प्रक्रिया में समान अवसर सुनिश्चित करने और जनता के विश्वास को बनाए रखने के लिए मतदाता दमन, गेरीमांडरिंग और चुनावी धोखाधड़ी को रोकने के लिए तंत्र का अस्तित्व महत्वपूर्ण है। शक्तियों का पृथक्करण और न्यायपालिका की स्वतंत्रता एक लोकतांत्रिक प्रणाली के कामकाज के लिए महत्वपूर्ण हैं। लोकतंत्र जाँच और संतुलन की एक प्रणाली पर निर्भर करता है, जहाँ कार्यकारी, विधायी और न्यायिक शाखाएँ स्वतंत्र रूप से काम करती हैं और एक दूसरे को जवाबदेही प्रदान करती हैं। एक निष्पक्ष और स्वतंत्र न्यायपालिका कानून के शासन को बनाए रखने, व्यक्तिगत अधिकारों की रक्षा करने और यह सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण है कि सरकार की कार्रवाई संवैधानिक सिद्धांतों के अनुरूप हो। लोकतंत्र की स्थिति का आकलन करने में यह जांचना शामिल है कि इन सिद्धांतों का किस हद तक पालन किया जाता है और क्या न्यायपालिका पर कोई अनुचित राजनीतिक प्रभाव है।[10]

5. कानून के शासन का पालन

कानून के शासन का पालन करना लोकतांत्रिक प्रणालियों का एक मूलभूत सिद्धांत है और लोकतंत्र की स्थिति का मूल्यांकन करते समय आकलन करने के लिए एक महत्वपूर्ण पहलू है। कानून का शासन इस सिद्धांत को संदर्भित करता है कि सरकारी अधिकारियों सहित सभी व्यक्ति कानून के अधीन हैं और उन्हें इसका पालन करना चाहिए, और यह कि कानून सभी नागरिकों के लिए लगातार और निष्पक्ष रूप से लागू होता है। कानून के शासन का पालन व्यक्तिगत अधिकारों और स्वतंत्रता की सुरक्षा सुनिश्चित करता है, जवाबदेही और पारदर्शिता को बढ़ावा देता है, और सत्ता के मनमाने प्रयोग को रोकता है।[11]

लोकतंत्र की स्थिति का आकलन करते समय, कानून के शासन से संबंधित निम्नलिखित पहलुओं पर विचार किया जाना चाहिए:

कानूनी ढाँचा: एक मजबूत लोकतांत्रिक प्रणाली के लिए एक सुपरिभाषित कानूनी ढाँचे की आवश्यकता होती है जो स्पष्ट और सुलभ कानूनों, विनियमों और प्रक्रियाओं को स्थापित करता हो। कानूनों को एक पारदर्शी विधायी प्रक्रिया के माध्यम से अधिनियमित किया जाना चाहिए और संवैधानिक सिद्धांतों और अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार मानकों के अनुरूप होना चाहिए। एक व्यापक और सुलभ कानूनी ढांचा सुनिश्चित करता है कि नागरिक अपने अधिकारों और दायित्वों को समझें और आवश्यकता पड़ने पर कानूनी उपायों की तलाश कर सकें।

न्यायपालिका की स्वतंत्रता: कानून के शासन को बनाए रखने के लिए एक स्वतंत्र और निष्पक्ष न्यायपालिका आवश्यक है। न्यायाधीशों को उनकी योग्यता और सत्यनिष्ठा के आधार पर नियुक्त किया जाना चाहिए, और उन्हें अनुचित प्रभाव से मुक्त होना चाहिए, चाहे वह कार्यपालिका, विधायी, या किसी अन्य बाहरी अभिनेताओं से हो। न्यायिक स्वतंत्रता यह सुनिश्चित करती है कि कानूनी विवादों को निष्पक्ष और निष्पक्ष रूप से

www.ignited.in

सुलझाया जाए, और यह कि सरकार के कार्य कानूनी जांच के अधीन हैं।

न्याय तक पहुंच: कानून के शासन का एक प्रमुख पहलू यह सुनिश्चित करना है कि सभी व्यक्तियों की न्याय तक समान पहुंच हो। इसका मतलब है कि कानूनी प्रक्रियाएं सुलभ, सस्ती और भेदभाव से मुक्त होनी चाहिए। जो प्रतिनिधित्व नहीं कर सकते उन्हें पर्याप्त कानूनी सहायता सेवाएं प्रदान की जानी चाहिए, और न्यायालय प्रणाली के बाहर विवादों को हल करने के लिए वैकल्पिक विवाद समाधान तंत्र उपलब्ध होना चाहिए।

जवाबदेही और पारदर्शिता: कानून के शासन का पालन करने के लिए सरकारी अधिकारियों और संस्थानों के कार्यों में जवाबदेही और पारदर्शिता की आवश्यकता होती है। सार्वजनिक अधिकारियों को उनके कार्यों के लिए जवाबदेह ठहराया जाना चाहिए, और निरीक्षण के लिए तंत्र, जैसे कि स्वतंत्र भ्रष्टाचार विरोधी निकाय और लोकपाल कार्यालय, स्थापित होने चाहिए। इसके अलावा, सरकार की निर्णय लेने की प्रक्रिया पारदर्शी होनी चाहिए, जनता के लिए आसानी से उपलब्ध जानकारी और नागरिक भागीदारी के तंत्र के साथ।[12]

6. निष्कर्ष

अंत में, "लोगों की आकांक्षाओं की नींव पर खड़े लोकतंत्र के नए मंदिर" की अवधारणा एक लोकतांत्रिक प्रणाली का प्रतीक है जो सामूहिक इच्छा और अपने नागरिकों के सपनों पर बनी है। यह एक नए दृष्टिकोण या पुनर्जीवित संस्था का प्रतिनिधित्व करता है जो लोगों की उभरती जरूरतों और आकांक्षाओं के प्रति उत्तरदायी होने के दौरान लोकतांत्रिक सिद्धांतों और मूल्यों को कायम रखता है। सक्रिय नागरिक भागीदारी का महत्व और यह मान्यता कि लोकतंत्र सामूहिक इच्छाओं और जनता की आशाओं का प्रतिबिंब होना चाहिए। लोगों की आकांक्षाओं की नींव को गले लगाकर, लोकतंत्र के एक नए मंदिर का उद्देश्य एक ऐसी समावेशी और सहभागी व्यवस्था बनाना है जो अपने नागरिकों की जरूरतों और आकांक्षाओं को पूरा करने का प्रयास करे।

संदर्भ:

1. क्वान-चोई त्से। थॉमस (2017), "किसकी नागरिकता शिक्षा? हांगकांग एक स्थानिक और सांस्कृतिक राजनीति परिप्रेक्ष्य से" सांस्कृतिक राजनीति प्रवचन। खंड 28; नंबर 2; वर्ष 2007. 159-177।
2. डीगन। मैरी जो (2016), "जेन एडम्स ऑन सिटिजनशिप इन ए डेमोक्रेसी" जर्नल ऑफ क्लासिकल सोशियोलॉजी। खंड 10; नंबर 3; वर्ष 2010. 217-238।
3. बहबहानी.के (2015), "किर्गिस्तान में नागरिकता शिक्षा: एक नए लोकतंत्र का निर्माण" नागरिकता, सामाजिक और आर्थिक शिक्षा। खंड 11; नंबर 2; वर्ष 2012. 145-157
4. दीना कीवान (2017) "असहज संबंध ?: अंग्रेजी नागरिकता शिक्षा नीति निर्माण प्रक्रिया में 'नागरिकता', 'लोकतंत्र' और 'विविधता' की अवधारणाएं" शिक्षा, नागरिकता और सामाजिक न्याय। खंड 2; नंबर 3; वर्ष 2007. 223-235।
5. सेसिलियरियस एग्निलर (2019), "एकीकरण या विखंडन" वैश्विक समाज में कॉलेज छात्र नागरिकता, (शिक्षा, ज्ञान और अर्थव्यवस्था), एरिज़ोना विश्वविद्यालय, यूएसए, वॉल्यूम 5, नंबर 1-2, वर्ष 2011, 29-44।
6. एहमन, एल.एच. (2020) द अमेरिकन स्कूल इन द पॉलिटिकल सोशलाइजेशन प्रोसेस, रिव्यू ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, 50(1), 99-119।
7. बेन किस्बी (2017) "न्यू लेबर एंड सिटीजनशिप एजुकेशन, पार्लियामेंट्री अफेयर्स। वॉल्यूम 60; नंबर 1; वर्ष 2007। 84-101।
8. ग्रोएनौ, विलियम वान डब्ल्यू। (2020) राजनीति पर राज - भारतीय शैक्षिक समीक्षा। वॉल्यूम। 25 (3), 1-13।
9. क्रिस्टीन हान (2017) "इतिहास शिक्षा और 'एशियाई' लोकतंत्र के लिए 'एशियाई' मूल्य: सिंगापुर का मामला" हिंदू धर्म आज। खंड 37; नंबर 3; वर्ष 2007. 383-398
10. जेम्स स्लोम (2018), "टीचिंग डेमोक्रेसी: द रोल ऑफ़ पॉलिटिकल साइंस एजुकेशन" ब्रिटिश जर्नल ऑफ़ पॉलिटिक्स एंड इंटरनेशनल रिलेशंस। खंड 10; नंबर 3; वर्ष 2008. 509-524
11. बेनेट, एस.ई. (2019) द पास्ट नीड बी प्रोलॉग: व्हाई पेसिमिज्म अबाउट सिविक एजुकेशन इज प्रीमेच्योर: पॉलिटिकल साइंस एंड पॉलिटिक्स, 32(4), 755-757।
12. जोशिया ओ. अजिबॉय (2019), "चिल्ड्रन मीडिया यूसेज, सिविक इंटरेस्ट एंड पॉलिटिकल रिलेटेड प्रैक्टिसेज एमंग बोत्सवाना प्राइमरी स्कूल प्यूपिल्स: एन एक्सपीरियंस इन इनफॉर्मल सिविक एजुकेशन" जर्नल ऑफ सोशल साइंसेज। खंड 20; नंबर 3; वर्ष 2009. 189-196।

www.ignited.in

13. कीटिंग। एवरिल (2016), "यूरोप के नागरिकों को शिक्षित करना: यूरोपीय नागरिकता के लिए शिक्षा के राष्ट्रीय-राष्ट्रीय मॉडल से आगे बढ़ना" नागरिकता अध्ययन। खंड 13; नंबर 2; वर्ष 2009. 135-151।

Corresponding Author

Harishankar Singh Kansana*

Asst. Professor, Department of Political Science, Govt College Mau, Bhind.